चतुर्थ अध्याय

“विवेच्य उपन्यासों में संवाद योजना”

चतुर्थ अध्याय

"विवेच्य उपन्यासों में संवाद योजना"

विषय प्रवेश :

समाजाभिमुख प्रतिभासंपन्न साहित्यिक जयप्रकाश कर्दम हिंदी दलित साहित्यकारों में अपनी पहचान बनानेवालों में से एक हैं। उन्होंने साहित्यकार के दायित्व के प्रति प्रतिबद्ध रहकर अपनी कलम द्वारा शोषित, पीड़ित, दलित जनों के यथार्थ जीवन को उदघाटित करते हुए सशक्त रूप रेखांकित किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में कथ्य, पात्र, भाषा, उद्देश्य के साथ-साथ संवाद योजना को उत्कृष्ट और जीवित रूप में रेखांकित किया है। ये संवाद इन रचनाओं का बल और प्राण है। उनके विवेच्य उपन्यासों में संवाद योजना, सहज स्वाभाविक, अकृत्रिम, चुस्त, बोधगम्य और सहज संप्रेषणीय दृष्टीगोचर होती है। उन्होंने अपनी रचनाओं में निहित उद्देश्य की परिपूर्ति हेतु 'संवाद योजना' बेहद रोचक ही नहीं बल्कि पाठकों को आरंभ से अंत तक बाँध रखने में सक्षम बनाई है। अत: यहाँ संवाद योजना का परिचयात्मक विवेचन हम करेंगे -

4.1 संवाद योजना का स्वरूप तथा महत्त्व :

साहित्यिक विधा उपन्यासों के तत्वों में मेरूदण्ड के रूप में 'संवाद तत्व' कार्यरत है। रचनाओं के उद्‌भव तथा विकास के साथ-साथ संवादों का स्वरूप वृहद वैविध्यपूर्ण रहा है कि आज तक इन्हें कोई भी विद्वान निश्चित परिभाषाओं में वद्‌ध करने में सफलता हासिल नहीं कर सका। फिर भी प्रचलित मतों के आधार पर कृति में पात्रों की बातचीत को हम 'कथोपकथन' या 'संवाद' कह सकते हैं। किसी भी रचना में निहित पात्रों के सशक्त तथा उद्देश्यगत संवाद उस रचना की जीवंतता के प्रमाण हैं। संवादों का प्रमुख कार्य हैं कि व्यक्ति के व्यक्तिमत्व में छिपे हुए भावनाओं को जागृत करना, इसके साथ-साथ भाव-भावनाओं का संप्रेषण करना, सूचना देना, शिष्टाचार प्रकट करना, निषेध करना, विनय करना, दूसरों को प्रभावित करना, तथ्य के प्रति संदेह प्रकट

करना, अर्धसत्यों को प्रस्तुत करना, व्यर्थ या अर्थहीन संदर्भो को उजागर करना आदि। इन बातों को केंद्र में रखकर 'संवाद' अपनी कार्यपूर्ति करता रहता है।

डॉ.प्रतापनारायण टण्डन जी ने कथोपकथन या संवाद योजना की उपन्यास में महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहा है कि - "कथोपकथनों के द्वारा कुछ विचारों को संजीवता देने में सरलता पड़ती है। नाटकों में जो वस्तु अभिनय द्वारा व्यक्त होती है 'उपन्यास' में वह बहुत कुछ कथोपकथनों द्वारा लायी जाती हैं।"[1]

डॉ.सूर्यदिन यादव उपन्यासों के संवादों की महत्ता के बारे में कहते है "संवाद मात्र पात्रों के वार्तालाप नहीं बल्कि ऐसे कथन होते हैं। जिनके द्वारा परिवेशगत जीवन के रहस्यों का उद्घाटन होता हैं। संवाद एक अनुभूति जन्य सत्य होता हैं जो लेखक नई जीवन से उपजे पात्रों के मुख से मुखरित होता है। इन संवादों से विशेष पात्रों के चरित्र नहीं उभरते बल्कि समग्र परिवेशगत जीवन का चित्रांकन होता है। जीवन यथार्थ को रूपायित एवं जीवित करने के लिए संवादों का विशिष्ट योगदान होता हैं।"[2]

अत: उक्त कथन से स्पष्ट है कि उपन्यासों के तत्वों में कथोपकथन या संवाद एक अहंम् भूमिका निभाते हैं। सभी उपन्यासकारों का 'संवाद चयन' के पीछे उसका अपना एक निश्चित उद्देश्य रहता है। संवाद चयन के निम्नांकित उद्देश्य माने जाते हैं -

कथानक को गतिशील बनाना।

पात्रों के अन्तर्मन को व्यक्त करना।

दृश्यों को जीवंत रूप में उदघाटित करना।

कथ्य में निहित निश्चित उद्देश्य को अभिव्यक्त करना आदि।

अर्थात उक्त विवेचन इन बातों का संकेत देता हैं कि कथोपकथन या संवादों के माध्यम से ही रचनाकार अपने उद्देश्य तत्व एवं विचार दर्शन को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश करता है। कथोपकथन द्वारा पात्रों के अस्तित्व की स्थिति का

पता चालता है। कथोपकथन का संबंध कथावस्तु तथा पात्र दोनों से है। इसमें अर्थवोध के साथ-साथ सार्थकता, स्वाभाविकता, रोचकता, संक्षिप्तता, उद्देश्यपूर्णता, नाटकीयता इन गुणों का होना महत्त्वपूर्ण ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी है।

डॉ.शान्ति मलिक् ने उनकी रचना 'हिंदी नाटकों की शिल्पविधि का विकास' में संवादों के प्रमुख निम्नप्रकार माने हैं -

"
1. व्याख्यात्मक संवाद
2. आवेशात्मक संवाद
3. नाटकीय संवाद
4. व्यंग्यात्मक संवाद
5. गंभीर संवाद
6. तर्कपूर्ण संवाद
7. अलंकारिक संवाद
8. व्यावहारिक संवाद
9. मार्मिक संवाद आदि।"[3]

अत: डॉ.शान्ति मलिक के संवादों के उक्त प्रकारों के साथ-साथ चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करनेवाले संवाद, विवरणात्मक संवाद, संक्षिप्त संवाद, उद्देश्यपूर्ति में सहाय्यक संवाद आदि संवादों के प्रकार भी 'जयप्रकाश कर्दम' जी के विवेच्य उपन्यासों में दृष्टिगोचर होते हैं -

4.2 विवेच्य उपन्यासों में संवाद योजना :

'जयप्रकाश कर्दम' जी के 'करुणा' और 'छप्पर' उपन्यासों में 'संवाद योजना' के प्रकार तथा उनका परिचयात्मक विवेचन यहाँ प्रस्तुत हैं -

4.2.1 व्याख्यात्मक संवाद :

"कलात्मकता और संप्रेषण के साथ मर्मस्पर्शी घटना तथा किसी विषय

वस्तु का उद्‌घाटन एक ही वाक्य में करना 'व्याख्यात्मक' संवाद कहलाता है। अत: ऐसे संवादों में मन-मानस में उठे हुए अनेकविध भावों को उजागर किया जाता है।" 'जयप्रकाश कर्दम' जी के 'करुणा' और 'छप्पर' उपन्यासों में 'व्याख्यात्मक संवाद' के उदाहरण निम्न रूप में द्रष्टव्य हैं -

'करुणा' लघु उपन्यास में भारतीय समाजव्यवस्था सामंतवादियों तथा पूँजीपतियों के हाथों की कठपुथली बनी हैं। यहाँ पर सामान्य जन के हित में कोई भी कदम नहीं उठता। इसे स्पष्ट करते हुए रमेश कहता है -"केवल वही लोग सुरक्षित हैं तथा उनके साथ ही न्याय होता है जो समृद्ध हैं, शक्तिशाली हैं।"[4]

उक्त संवाद में मर्मस्पर्शी तथ्य को प्रभावी रूप में उद्‌घाटित किया है। जिससे व्याख्यात्मक संवाद के दर्शन होते हैं।

'छप्पर' उपन्यास का नायक चंदन समाज में व्याप्त विषमतावादी व्यवस्था के प्रति संघर्षरत रहकर समताधिष्ठित समाज व्यवस्था का निर्माण करने के विचारों को स्पष्ट करते हुए दलित समाज के संघर्ष के मूल उद्देश्य को उद्‌घाटित करते हुए कहता है - "हम व्यवस्था के विरोधी हैं, व्यक्ति के नहीं। हमारी लड़ाई व्यवस्था के खिलाफ है, किसी व्यक्ति से कोई द्वेष नहीं है हमें। हम न्याय और समता के पक्षधर हैं और समानता प्राप्त करने के लिए हमें व्यवस्था को बदलाना है क्योंकि हमारी व्यवस्था अन्याय और असमानता को जन्म देनेवाली है।"[5]

उक्त संवाद में व्याख्यात्मकता के दर्शन होते हैं।

अत: जयप्रकाश जी के विवेच्य उपन्यासों में व्याख्यात्मक संवादों के पर्याप्त मात्रा में दर्शन होते हैं।

4.2.2 आवेशात्मक संवाद :

"इन संवादों की शैली ओज गुण से परिपूर्ण होती है। ऐसे संवाद पाठकों की धमनियों का खून खौल देने में समर्थ होते हैं।" इसके अंतर्गत पात्रों की उत्तेजनापूर्ण

मनोभावों को प्रकट किया जाता है। 'जयप्रकाश कर्दम' जी के 'करुणा' और 'छप्पर' उपन्यासों में 'आवेशात्मक संवाद' के उदाहरण निम्न रूप में द्रष्टव्य हैं...

'करुणा' लघु उपन्यास में ठाकुर सुखदेवसिंह एक प्रतिष्ठित तथा धामपुर गाँव का सरपंच है। उनका बेटा सूरज उद्दण्ड तथा शरारती है जो गाँव के एक दलित युवती पर अत्याचार करने के असफल जुर्म में गाँववालों से पकड़ा जाता है साथ ही उसी गाँव का एक दलित युवक रमेश सूरज के खिलाफ गाँव में पंचायत बुलाकर पंचों से सूरज को सजा दिलाता है। जिससे सूरज का पिता ठाकुर सुखदेवसिंह समाज में स्थित दलित वर्ग के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए कहता है - "एक चमार का इतना साहस कि मेरी इज्जत से खिलवाड करने पर तुल गया है।...... सरकार ने इन्हें सुविधायें क्या दे दीं इन दो कोड़ी के आदमियों का दिमाग चढ़ गया है। कल तक परिवार भूखों मरता था, आज भर पेट मिलने लगा है तो दिमाग सातवें आसमान पर झूल रहा है। चला है नेतागिरी करने। बात को ऐसे तूल दे रहा है जैसे कहार की नहीं ब्राह्मण या ठाकुर की लड़की छेड़ दी हो...। अरे चमार की लड़की छेड़ी है उसने किसी ब्राह्मण या ठाकुर की तो नहीं छेड़ी। इसमें कौन-सा वड़ा अनर्थ हो गया। आखिर कहारिन-चमारिन होती किस लिए हैं।"[6]

उक्त संवाद में आवेशात्मक संवाद के दर्शन होते है।

'छप्पर' उपन्यास का नायक चंदन दलित समाज के सामाजिक परिवर्तन के लिए दलितों को शिक्षित तथा संगठित करके प्रस्थापित सनातन व्यवस्था के प्रति संघर्ष करके समता स्थापित करने के कार्य में सक्रीय भूमिका निभाता है जिससे मातापुर गाँव का सवर्ण काणापंडित कलक्टर साहब से दलितों के प्रति आवेशात्मक स्वर में कहता है- "वे मिटाएंगे सबका भेद। ऐसा कैसे हो सकता है, कैसे वरावर हो सकते है, ब्राह्मण और भंगी सब? यह कोई उनकी बनाई व्यवस्था है कि लिया और खत्म कर दिया। सनातन व्यवस्था है, यह तो रहेंगी ही। धर्मशास्त्रों से भी वड़ा कोई हो सकता है भला।"[7]

उक्त संवाद में आवेशात्मक संवाद को दर्शाया है।

अत: जयप्रकाश जी के विवेच्य उपन्यासों में 'आवेशात्मक संवाद' कथ्य को गतिशील तथा सजीव बनाने में सुसंगत जगह पर यथायोग्य रूप में रेखांकित हुए हैं।

4.2.3 नाटकीय संवाद :

"इन संवादों में पात्र अपने विचारों को एक के बाद एक संक्षिप्त और नाटकीय रूप में प्रस्तुत करते हैं। इनकी वजह से उपन्यास में रोचकता और प्रवाहशीलता स्थापित होती हैं।" जयप्रकाश कर्दम जी के 'छप्पर' उपन्यास में नाटकीय संवाद का उदाहरण निम्न रूप में द्रष्टव्य है......

'छप्पर' उपन्यास का नायक चंदन उच्च शिक्षा के लिए गाँव से शहर आता है। वह शहर में एक दलित मजदूर हरिया की झोपड़ी में रहता है। चंदन अपनी शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक कार्यो में भी कार्यरत रहता है। किन्तु उसकी आर्थिक स्थिति दयनीय होने के कारण उसकी शिक्षा में बाधा निर्माण होने की संभावना से वह चिंतित रहता है। जिससे चंदन का सहयोगी तथा पिता समान हरिया चंदन की चिंता को देखकर उसे बीमार समझकर डॉक्टर को घर ले आता है। जो चंदन हरिया के प्यार को समझकर डॉक्टर से जाँच करवाता है। किन्तु चंदन बीमार होता तो बतलाता। लेकिन शारिरिक रूप से वह बीमार नहीं था। बल्कि वह तो मानसिक रूप से पीड़ित था। इस समय डॉक्टर और चंदन के बीच नाटकीय संवाद स्थापित हुए हैं -

डॉक्टर : "कहीं दर्द हैं?

चंदन : 'नहीं। चंदन ने इंकार में गर्दन हिला दी।

डॉक्टर : 'पेट में कोई तकलीफ?'

चंदन : 'नहीं!

डॉक्टर : 'अपनी जीभ दिखाइए।' किसी तरह की कोई परेशानी कोई दर्द?"[8]

उक्त संवादों में नाटकीयता के दर्शन होते हैं।

अत: जयप्रकाश जी के करुणा उपन्यास में नाटकीय संवादों का अभाव हैं तो 'छप्पर' उपन्यास में कम मात्रा में नाटकीय संवादों को दर्शाया हैं।

4.2.4 व्यंग्यात्मक संवाद :

जिन संवादों में मनोविनोद किया जाए वे हास्यपूर्ण संवाद कहलाते हैं। किसी कमजोरी के संबंध में नफरत, ईर्ष्या आदि भावना से मजाकपूर्ण, हृदय को ठेंस पहुँचानेवाली बातों का जिक्र किया जाता है उन्हें 'व्यंग्यात्मक संवाद' कहते हैं।" ...जयप्रकाश कर्दम जी के 'करुणा' तथा 'छप्पर' उपन्यासों में 'व्यंग्यात्मक संवाद' के उदाहरण निम्न रूप में द्रष्टव्य हैं -

'करुणा' उपन्यास में रमेश की वहन रीता की साँस उसके बांझ पन पर व्यंग्य करते हुई कहती है - "तू असैनी है, कुलच्छनी है। तेरी कोख से आदमी तो क्या कभी चिड़िया का वच्चा भी पैदा नहीं होगा।"[9]

'करुणा' लघु-उपन्यास में एक प्रतिष्ठित उच्चवर्गीय ठाकुर सुखदेवसिंह का बेटा सूरज उद्दण्ड तथा शरारती है जो गाँव से अनैतिक हरकतों के जुर्म के कारण गाँव से निष्कासित होकर शहर में वदनाम वेश्याओं की वस्ती में जाकर रहता है। सूरज वहाँ पर एक चम्पा नामक वेश्या को अपने पत्नी के रूप में स्वीकारता है। जिससे उसके पिता ठाकुर सुखदेवसिंह के मन को ठेंस पहुँचती है। तो वे अपने वेटे सूरज के अनैतिक कृत्य पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं - "तुमने कोठे पर जाकर मांस खा लिया कोई वात नहीं, पर हड्डी को गले में लटकाकर घूमने की क्या जरूरत थी?"[10]

'छप्पर' उपन्यास में भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित धर्म, धर्मगुरू, धर्म शास्त्रों, ईश्वर, रूढ़ी परंपरा आदि को सामान्य जन के शोषण के साधन समझकर धर्म पंडितों की पाखंडता पर प्रहार करते हुए उपन्यास का नायक चंदन व्यंग्यात्मक स्वर में कहता है- व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी न किसी रूप में व्राह्मण उससे टैक्स वसूल करता है। चाहे कितना भी अशिक्षित, अयोग्य और अक्षम क्यों न हो लेकिन एक

ब्राह्मण, पंडित, पुरोहिताई करके सुख और सम्मान से जी सकता है।"[11] यहाँ पर पंडितों-पुरोहितों पर व्यंग्य किया हुआ लक्षित होता है।

अत: जयप्रकाश जी के विवेच्य उपन्यासों में व्यंग्यात्मक संवाद के दर्शन स्पष्ट रूप में होते हैं।

4.2.5 गंभीर संवाद :

"गहन, दार्शनिक और अध्यात्मिक विचारों को जहाँ प्रकट किया जाता है, वहाँ गंभीर संवादों की योजना की जाती है। इन संवादों की शैली से गूढ़ता, गहनता, तात्विकता एवं गंभीरता प्रत्यक्ष परिलक्षित होती है।" जयप्रकाश कर्दम जी के 'करुणा' तथा 'छप्पर' उपन्यासों में गंभीर संवाद के उदाहरण निम्न रूप में द्रष्टव्य हैं......

'करुणा' लघु उपन्यास की नायिका करुणा जाति से ब्राह्मण है वह हिंदू धर्म में निहित विषमतावादी व्यवस्था के प्रति निराश होकर बौद्ध धम्म में निहित मानवतावादी मूल्यों से प्रभावित होकर उसके रहस्यों के बारे में बौद्ध विहार में जाकर बौद्ध भिक्षुणी के सम्मुख अपनी जिज्ञासाओं को प्रस्तुत करते हुए कहती है - "इस भिक्षु जीवन में आपको कौन-सा सुख मिलता है, जो सांसारिक सुखों से श्रेष्ठ है?"

भिक्षुणी ने बताया - "सांसारिक जीवन में सुख है ही कहाँ। सब कुछ दु:खमय है। जन्म से जाति, जरा, मरण, सब दु:ख है। वांछित वस्तु का न मिलना दु:ख है, अवांछित वस्तु का मिलना दु:ख है। प्रिय का वियोग दु:ख है, अप्रिय का संयोग दु:ख है। दरिद्रता और अभाव दु:ख है। शत्रु से भय, शंका, रहना दु:ख है। विषयों के प्रति राग, आसक्ति यहाँ तक कि सभी कुछ दु:खमय है। सारा जीवन दु:खों से भरा है। मनुष्य दु:ख में पैंदा होता है तृष्णा के कारण राग और आसक्ति में डूबा मनुष्य जीवन भर दु:ख भोगता है और दु:ख सहते-सहते ही मर जाता है। विषयों के प्रति अनासक्ति और तृष्णा के नाश में ही सुख हैं।"[12]

अर्थात उक्त संवाद में करुणा तथा बौद्ध भिक्षुणी के बीच स्थापित संवाद में गहन दार्शनिकता, अध्यात्मिकता तथा तात्विकता के गुण निहित होने से गंभीर संवाद

के दर्शन होते हैं।

'छप्पर' उपन्यास का नायक चंदन दलितों के शोषण, दारिद्रय, आदि के कारणों में स्थित धर्म, ईश्वर के नाम पर समाज में व्याप्त पाखंडता की असलियत का पर्दाफाश करते हुए अज्ञानी लोगों से कहता है - "देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना तथा उनके लिए यज्ञ और हवन आदि अनुष्ठानों की परंपरा के पीछे एक ही उद्देश्य रहा है और वह है समाज को दिव्य-शक्तियों से भयभीत रखकर धर्म विशेष को जीवित रखना। यज्ञ आदि अनुष्ठानों के पीछे यही कारण है और भारतीय समाज की यह एक त्रासदी है कि किसी भी आपदा के समय उससे निपटने के उपाय खोजने की वजाय देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना की जाती है, तरह-तरह के अनुष्ठान किए जाते हैं। तुम लोगों को भी यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि पत्थर के इन देवी-देवताओं या भगवानों की पूजा-अर्चना करने या उनको भेंट चढ़ाने से कुछ भी होनेवाला नहीं है। इस सबका कोई औचित्य नहीं है सिवाय इसके कि इसके सहारे कुछ लोगों की आजीविका चलती है और उनको मेहनत करके कमाने की जरूरत नहीं पडती।"[13]

अर्थात 'छप्पर' उपन्यास के उपर्युक्त संवाद में गूढ़ता, गहनता और तात्विकता के गुणों से 'गंभीर संवाद' के दर्शन होते है।

अत: जयप्रकाश जी के विवेच्य उपन्यासों में 'गंभीर संवाद' पर्याप्त मात्रा में दृष्टिगोचर हैं।

4.2.6 तर्कपूर्ण संवाद :

"यह संवाद पाठकों के लिए उपयुक्त नहीं होते। क्योंकि इन संवादों में जटिलता एवं दुर्बोधता होती है। असाधारण पाठकों के लिए ये सुवोध एवं ग्राहय होते हैं। ये संवाद मनुष्य को सोचने के लिए बाध्य करते हैं। कभी-कभी सामान्य आदमी भी तर्क करने लगता है।" जयप्रकाश कर्दम जी के 'करुणा' तथा 'छप्पर' उपन्यासों में 'तर्क पूर्ण संवाद' के उदाहरण निम्न रूप में द्रष्टव्य हैं......

'करुणा' लघु-उपन्यास में दलित युवक रमेश को उसकी बहन रीता की हत्या के झुठे आरोप को सच में बदलने के लिए पुलिस अफसर रघुनाथ तिवारी ठाकुर सूरज से रिश्वत लेकर झुठ को सच साबित करने के लिए तर्क पेश करते हुए कहता है-"देखिए, आप कह रहें हैं तो मैं मामले की फिर से तफसीस करूँगा गाँव में जाकर और यदि यह बात सही पायी कि रीता ने आत्महत्या नहीं की बल्कि उसकी हत्या की गयी है, तो इसमें जो भी दोषी पाया जाएगा उसे अवश्य सजा दी जाएगी।"[14]

उक्त संवाद में तर्क के दर्शन होते है।

'छप्पर' उपन्यास में ठाकुर हरनामसिंह सनातन व्यवस्था के समर्थक तथा शोषक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। उसे एक रजनी नामक संतान है जो शिक्षित तथा परिवर्तनवादी विचारों की पक्षधर है। वह मानवतावादी मूल्यों की हिमायती है। रजनी अपने पिता द्वारा दलितों पर किए गये अन्याय-अत्याचार का विरोध करते हुए अपने जमींदार पिताजी से दलित शिक्षित पीढ़ी भविष्य में हमारा शोषण करेगी इस पर तर्क पेश करती हुई कहती है -

"जिन लोगों का दमन और शोषण करके आपने यह मिल्कियत खड़ी की है जिनको अपमानित और प्रताड़ित किया हैं आपने आप देख रहें है कि आज वे लोग आपकों घृणा और तिरस्कार से देखने लगे हैं। आपके द्वारा किए गए अपमान और उत्पीड़न की प्रतिक्रिया केवल आप तक सीमित नहीं होगी। उन शोषित-पीड़ित लोगों के मन में जो आक्रोश है, जो आग है, आपके साथ हमें भी जलाएगी वह। पीढ़ी-दर-पीढ़ी जिन लोगों को सताया गया है, जो अत्याचार और बर्बरता के शिकार रहें हैं, सदियों से श्रम और संताप ने तोड़ दिया है जिनको पूरी तरह केवल आप से ही घृणा नहीं करेंगी उनकी संतान। आप तो नहीं रहेंगे कल को, हम पर उतारेगा उनका क्रोध और आक्रोश, हमारे साथ बरती जाएगी घृणा और उपेक्षा। तब कैसे संभव हो सकेगा हमारे लिए सम्मान और स्वाभिमान से जीना।"[15]

'छप्पर' उपन्यास के उपर्युक्त संवाद दुष्ट प्रवृत्ति के मनुष्य को सोचने के लिए विवश करता है। जिससे स्पष्ट है कि इसमें तर्क निहित है।

अत: जयप्रकाश जी के विवेच्य उपन्यासों में 'तर्कपूर्ण संवाद' पर्याप्त मात्रा में दृष्टिगोचर हैं।

4.2.7 अलंकारिक संवाद :

"जिन संवादों में अलंकारों से युक्त भाषा होती है तथा अपने विचारों को अलंकारों की सहायता से कलात्मक या सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया जाता है, वही अलंकारिक संवाद दिखाई देते हैं।" 'जयप्रकाश कर्दम जी के 'छप्पर' उपन्यास में 'अलंकारिक संवाद' का उदाहरण निम्न रूप में द्रष्टव्य है......

'छप्पर' उपन्यास का पात्र सुक्खा। उसकी पत्नी रमिया के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहता है - "जब दुल्हन बनकर आयी थी रमिया तो कैसी सुन्दर लगती थी कबूतरी-सी। कैसे अपने चपल हाथों से जल्दी-जल्दी घर का काम निपटाकर मेरे काम से लौटने का इन्तजार करती थी। उसकी चूड़ियों की खनक से कैसा संगीत-सा घुला रहता था घर भर में। आज वहीं रमिया कैसे मुरझा-सी गई है। चेहरे की वह चमक, वह रौनक सब बीते कल की वात हो गई है। सदां गुलाव के फूल की तरह खिला-खिला रहनेवाला उसका सुंदर शरीर अब सूखकर कैसा कॉटा-सा हो गया है। कैसी काठ सी हो गई है कल की वह कबूतरी।"[16]

उक्त संवाद रमिया के दुल्हन बनने पर का वर्णन 'अलंकारिक संवाद' के रूप में प्रस्तुत है।

अत: 'करुणा' उपन्यास में आलंकारिक संवादों का अभाव है। तो 'छप्पर' उपन्यास में आलंकारिक संवाद कम मात्रा दिखाई देते हैं।

4.2.8 व्यावहारिक संवाद :

"नित्य प्रति के व्यवहार में प्रयुक्त होनेवाले संवाद ही 'व्यावहारिक संवाद' कहलाते हैं। इनमें न अलंकारों की अधिकता होती है न काव्यत्व का अत्याधिक आग्रह

होता है। इन संवादों में भाषा की सजीवता और प्रवाह देखने को मिलता है। 'जयप्रकाश कर्दम' जी के 'करुणा' तथा 'छप्पर' उपन्यासों में 'व्यावहारिक संवाद' के उदाहरण निम्न रूप में द्रष्टव्य हैं...

'करुणा' लघु उपन्यास में धामपुर गाँव के ठाकुर सुखदेवसिंह का बेटा सूरज दलित युवती पर बलात्कार करने का प्रयास करता है जिसके पश्चात ठाकुर सुखदेवसिंह इस घटना का निषेध करते हुए समाज में आमन और समता की बातें गाँव के लोगों से कहता है - "गाँव में कल जो घटना घटी है, वह बहुत दुखद है और दुर्भाग्यपूर्ण है। गाँव में किसी की भी बहन-बेटी को सदा अपनी बहन-बेटी की तरह मानकर आचरण करना चाहिए। चाहे वह किसी भी जाति बिरादरी की क्यों न हो।"[17]

उक्त संवद में व्यावहारिक संवाद के दर्शन होते है।

'छप्पर' उपन्यास का पात्र सुक्खा समाज में समता, स्वतंत्रता, बंधुता के मूल्यों का पक्षधर है। वह समाज के सभी लोगों को मिल जुलकर रहने के लिए रजनी से कहता है -"हमारी तो यही कामना है कि लोग कटुता और कठोरता त्याग कर प्रेम और सद्भाव के साथ रहें दूसरों को सम्मान दें तथा खुद भी सम्मान के साथ जीए।"[18]

उक्त संवाद में व्यावहारिक संवाद के दर्शन होते है।

अत: जयप्रकाश जी के विवेच्य उपन्यासों में 'व्यावहारिक संवाद' पर्याप्त मात्रा में द्रष्टव्य हैं।

4.2.9 मार्मिक संवाद :

"जिसमें जीवन की यथार्थ बातों को प्रभावकारी शब्दों में अभिव्यक्त करते समय सच्चाई या जीवन का कटु सत्य उद्घाटित हो, तथा मन-मस्तिष्क को सोचने के लिए बाध्य करते हो, उन्हीं संवादों को 'मार्मिक संवाद' कहा जाता है।" 'जयप्रकाश कर्द म जी के 'करुणा' तथा 'छप्पर' उपन्यासों में 'मार्मिक संवाद' के उदाहरण निम्न रूप में द्रष्टव्य हैं......

'करुणा' लघु उपन्यास का शिक्षित दलित युवक रमेश सामाजिक शोषण का शिकार बना है। वह भारतीय समाज व्यवस्था में निहित अन्याय, अत्याचार, शोषण, कुटनीति, खली प्रवृत्तियों के व्यक्तियों के समाज व्यवस्था से निराश होकर कहता है-"जहाँ पर आदमी के अधिकारों का इस तरह हनन हो, जहाँ एक जवान और अविवाहित व्यक्ति को खस्सी होने को मजबूर होना पड़े। ऐसे समाज और ऐसी व्यवस्था का क्या लाभ?"[19]

उक्त संवाद में जीवन के मर्म को उद्घाटित किया है।

'छप्पर' उपन्यास का चंदन दलित समाज जीवन की यथार्थता को उजागर करते हुए उसके शिक्षित मित्र रामहेत रतन, नन्दलाल से कहता है -"हमें इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिए कि हमारी शिक्षा की सार्थकता और हमारे जीवन का श्रेय इस वात में है कि हमें अपने साथ-साथ अपने समाज के उत्थान और विकास की ओर भी ध्यान देना चाहिए। सदियों से दासता और गुलामी की जंजीरों में जकड़ा रहा है हमारा समाज। खाली पेट, नंगे तन और टूटे-फूटे छान-झोपडों में बसर करने की विवशता यही रहा है सैकड़ों-हजारों वर्षो से हमारे समाज का यथार्थ।"[20]

उक्त संवाद में भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित दलित समाज के हजारों सालों की दयनीय स्थिति को मार्मिकता के साथ दर्शाया गया है।

अत: जयप्रकाश जी के विवेच्य उपन्यासों में 'मार्मिक संवाद' पर्याप्त मात्रा में द्रष्टव्य हैं।

4.2.10 संक्षिप्त संवाद :

"संक्षिप्त संवादों को प्रस्तुत परिस्थिति एवं आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो उनकी महत्ता समझ में आती है। संक्षिप्त संवाद सुनियोजित होते हैं और उनमें प्रभावशीलता भी होती है। संक्षिप्त संवाद में जितना सीधा और संक्षिप्त प्रश्न है, उतना ही सीधा और साधा संक्षिप्त उत्तर होता है।" जयप्रकाश कर्दम जी के 'छप्पर' उपन्यास में 'संक्षिप्त संवाद' का उदाहरण निम्न रूप में द्रष्टव्य हैं......

'छप्पर' उपन्यास का नायक चंदन दलितों के बच्चों को शिक्षित बनाने के हेतु स्वयं का स्कूल निकालता है। चंदन के स्कूल में एक दिन कमला नामक युवती बलात्कार के पश्चात जन्में बच्चे का स्कूल में नाम दर्ज कराने आती है। उस समय चंदन और कमला के बीच संक्षिप्त संवाद निम्न रूप में दिखाई देते हैं -

"चंदन : बच्चे का नाम?

कमला : खिलाड़ी, वैसे खिल्लर कहती हू मैं तो।

चंदन : उम्र?

कमला : यही कोई चार-पाँच साल का होगा।

चंदन : पिता का नाम?" [21]

अत: 'करुणा' उपन्यास में संक्षिप्त संवादों का अभाव है। लेकिन 'छप्पर' उपन्यास में ऐसे संक्षिप्त और चुटीले संवाद कम मात्रा में दृष्टिगोचर होते हैं।

4.2.11 उद्देश्यपूर्ति में सहायक संवाद:

'उपन्यास में प्रत्येक कथोपकथन सोद्देश्य होना चाहिए। उद्देश्य रहित संवाद फीके और अनावश्यक प्रतीत होते हैं। सोद्देश्य संवाद कथा-विस्तार, पात्रों की मनस्थिति और वातावरण का चित्रण करने में सक्षम होते हैं। इनसे लेखक का प्रतिपाद्य स्पष्ट होता है। 'जयप्रकाश कर्दम जी के 'करुणा' तथा 'छप्पर' उपन्यासों में 'उद्देश्यपूर्ति में सहायक संवाद' के उदाहरण निम्न रूप में द्रष्टव्य हैं......

'करुणा' लघु उपन्यास का पात्र रमेश शिक्षित दलित युवक है। वह समाज में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, स्वार्थपरता,भ्रष्टाचार आदि से प्रताड़ित है। रमेश विषमता से व्याप्त समाज व्यवस्था में परिवर्तन करके समताधिष्ठित समाज निर्माण करने के उद्देश्य से करुणा से कहता है - "ऐसा समाज जो न्याय, समता और भातृत्व की भावनाओं पर आधारित हो। जहॉ शोषण न हो, जोर-जबरदस्ती न हो अन्याय न हों। जिस समाज के मनुष्यों का नैतिक चरित्र ऊँचा हो। जहाँ स्वार्थपरता न हो, धोखेवाजी न

हो, भ्रष्टाचार न हो तथा जहाँ नेताओं और सरकार का एकमात्र उद्देश्य 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' हो।"[22]

उक्त संवाद में न्याय, समता और बंधुता के विचारधारा का समाज में प्रचार-प्रसार करने का महत् उद्देश्य निहित है।

'छप्पर' उपन्यास के पात्र रामहेत, नन्दलाल, रतन तथा उपन्यास का नायक चंदन दलित समाज के शिक्षित युवक हैं। इन्होंने दलित समाज के विकास में स्वयं को समर्पित करते हुए दलितों का उत्थान करना अपने जीवन का उद्देश्य निश्चित करते हुए कहा है -

i) रामहेत -"मैं बिजनेस करूगा और अधिक से अधिक पैसा कमाऊँगा लेकिन अपने परिवार की आजीविका को छोड़कर सारा पैसा अपने समाज के उत्थान के कामों में लगाऊँगा।"

ii) नन्दलाल - "मैं वकालत ही करूँगा और कानूनी मामलों में अपने लोगों की मदद करूँगा तथा अपने लोगों की ओर से शोषण और अत्याचार के मुकदमें मुफ्त लड़ूँगा।"

iii) रतन - "मैं प्रशासनिक सेवा में ही जाना चाहूँगा और यदि चला गया तो प्रशासनिक स्तर पर लोगों को जिस मदद की जरूरत होगी उसके लिए मैं सदैव तत्पर रहूँगा।"

iv) चंदन - "मैं अपनी शिक्षा का उपयोग अपने दीन-हीन समाज के उत्थान के लिए करूँगा।"[23]

उपर्युक्त संवाद पात्रों की उद्देश्य पूर्ति के द्योतक हैं।

अत: विवेच्य उपन्यासों में निहित उद्देश्यों को सफलता के साथ प्रस्तुत करने के लिए उद्देश्य पूर्ति में सहायक संवाद पर्याप्त मात्रा में द्रष्टव्य हैं।

4.2.12 चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करनेवाले संवाद :

संवादों का मुख्य लक्ष्य चारित्रिक विशेषताओं का उद्‌घाटन करना हैं। उपन्यास के कथोपकथन ऐसे हो जिनमें पात्रों के चरित्रों का उद्‌घाटन करने की क्षमता हो। पात्रों की मनोदशा आन्तरिक ऊहापोह मनोभाव इस प्रकार के कथोपकथनों से जाने जा सकते हैं। एक पात्र अपने संवादों से दूसरे पात्र की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालते हैं। 'जयप्रकाश कर्दम' जी के 'करुणा' तथा 'छप्पर' उपन्यासों में 'चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करनेवाले संवाद' के उदाहरण निम्न रूप में द्रष्टव्य हैं......

'करुणा' लघु उपन्यास का पात्र रमेश उसके माता-पिता की असमय मृत्यु के पश्चात अपने पारिवारिक जिम्मेदारी का निर्वाह करने में पूरी निष्ठा के साथ कर्मरत है। जिससे उसकी चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए कहा है - "सबसे बड़ा होने के कारण इस समय घर का सारा बोझ रमेश के कंधों पर आ पड़ा था और अपने उत्तरदायित्वों का पालन वह पूरी निष्ठा से कर रहा था। वह खुद अभाव सहता किन्तु अपने भाई-बहनों को कोई अभाव नहीं खलने देता था। उनकी सुख-सुविधा के निमित्त उसने वह सब कुछ दांव पर लगा दिया जो उसके पास था, जो उसका अपना था। उनके सुख-दुख को ही उसने अपना सुख-दुख बना लिया था। उन्हें प्रसन्न देख वह स्वयं को काफी हल्का-फुल्का अनुभव करता था।"[24]

उक्त संवाद में रमेश के चारित्रिक विशेषताओं में संवेदनशील पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निष्ठा के साथ पालन करनेवाला युवक, त्याग, समर्पणशील युवक, आदर्शवादी, प्रेरणादायी तथा संघर्षशील आदि गुणों के दर्शन होते हैं।

'छप्पर' उपन्यास का नायक चंदन दलित मजदूर किसान की शिक्षित संतान है। वह सामाजिक दायित्व निर्वाह के प्रति प्रतिवद्ध है। चंदन दलित समाज के विकास हेतु दिन रात कठोर परिश्रम करता है। वह दलितों को शिक्षा, संगठन तथा संघर्ष का महत्त्व समझाकर उनमें वैचारिक जागृती करने में प्रयासरत है। चंदन के दलित उत्थान कार्य से प्रभावित होते हुए अशिक्षित दलित मजदूर हरिया चंदन से कहता है -

"त्याग और बलिदान की जो भावना तुम्हारे अंदर है और जिस दृढ निश्चय के साथ तुम काम रहें हो मैं उसका कायल हूँ बेटा! अकेला में ही नहीं सारे शहर तथा शहर से बाहर भी दूर-दूर तक, जहाँ तक तुम्हारी आवाज पहुँच रही है, सब लोग तुम्हें मानते हैं। समाज में एक क्रांति पैदा हो गई है। लोगों में एक जोश और स्फूर्ति भर दीं है तुमने। तुम्हारी एक आवाज पर अपना सब कुछ न्यौछावर करने को, अपनी जान तक दे देने को तैयार हैं लोग।... धन्य हैं तुम्हारे माता-पिता जिन्होंने तुम्हारे जैसे बेटे को जन्म दिया। अपने नाम को सार्थक कर दिया है तुमने। तुम सचमुच चंदन हो, अपने कुल-खानदान के भी और समाज के भी। तुमने अपनी खुशबू से इस समाज को महका दिया है।"[25]

उपर्युक्त संवाद में चंदन के चारित्रिक विशेषताओं में दृढनिश्चयी, दलितों के सामाजिक क्रांति का प्रतीक, त्याग, सर्मपणशील युवक, संवेदनशील, विद्रोही, स्वाभिमानी, पेरणादायी आदि गुणों के दर्शन होते है।

अत: जयप्रकाश जी के विवेच्य उपन्यासों में चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करनेवाले संवाद पर्याप्त मात्रा में द्रष्टव्य हैं।

4.2.13 विवरणात्मक संवाद :

प्रस्तुत संवाद के अंतर्गत स्वयं लेखक उपन्यास में स्थित मानवोचित व्यवहार उनकी चहल-पहल आदि का विवेचन-विश्लेषण अपने शब्दों में करता है। इस प्रकार के संवादों से रंगमंच अभिनय आदि चीजों का उद्घाटन करना आसान होता हैं। 'जयप्रकाश कर्दम' जी के 'करुणा' तथा 'छप्पर' उपन्यासों में 'विवरणात्मक संवाद' के उदाहरण निम्म रूप में द्रष्टव्य हैं -

'करुणा' लघु उपन्यास में जयप्रकाश जी ने विवरणात्मक संवादों के अंतर्गत देश में व्याप्त भ्रष्ट राजनीति, पूँजीपति तथा सामंतवादियों की शोषण नीति आदि के यथार्थ चित्रण को दर्शाया हैं। जिससे 'करुणा' उपन्यास के रमेश के संवाद इस कोटी में आते हैं -

जैसे - "देश में बेरोजगारी व्यापक रूप ले रही थी। युवा खून में असन्तोष बढ़ रहा था। जगह-जगह आन्दोलन हो रहे थे। कहीं रोजगार की माँग की जा रही थी, कहीं रोजगार भत्ते की। संसद या विधान सभा का चुनाव हार जानेवाले नेता इन आन्दोलनों के अगुवा बने हुए थे। सरकार भी इस ओर कम जागरूक न थी, किन्तु शासन तन्त्र में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण सुधार की उपेक्षा बेरोजगारी की समस्या और अधिक गंभीर होती जा रही थी। हर जगह शोषण का साम्राज्य था। पूँजीपति लोग मजदूरों का शोषण कर रहे थे, तो सरकारी अफसर भी जनता को लूटने और उसका शोषण करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे थे।"[26]

उक्त कथन में विवरणात्मक संवाद को दर्शाया है।

'छप्पर' उपन्यास में भारतीय समाज व्यवस्था में दलितों के गाँव तथा शहर के जीवनयापन के यथार्थ का विवरण जयप्रकाश जी इस प्रकार करते हैं -

जैसे - "शहर में भी बहुत से दलित और दरिद्र लोग वीना छुकी-भुनी सब्जी खाते हैं या केवल पानी या चाय के साथ नमक की रोटियां गले से नीचे उतारकर जिन्दा रहते हैं। फाका भी रह जाता है बहुत से घरों में। यहां भी तन ढ़कने को कपड़ा नहीं है बहुत से लोगों के पास। यहां भी गावों की तरह बच्चे रेत-मिट्टी में खेलते नंगे घूमते हैं। बहुत सी औरतों के पास यहां भी मैली-कुचैली सी सिर्फ एक साड़ी होती है सस्ती सी कच्चे पक्के रंगो की। दूसरी साड़ी के अभाव में बहुत सी औरते नहा-धो नहीं पातीं महीनों तक। इतना ही नहीं बहुत सी गर्भवती औरतों को फुटपाथ पर ही खुले आकाश के नीचे बच्चे पैदा करने पड़ते है। यह एक विवशता है, एक त्रासदी है उनके जीवन की, जिसे नियति का आदेश मान बैठे हैं ये लोग।"[27]

उक्त संवाद में विवरणात्मक संवाद के दर्शन होते है।

अत: जयप्रकाश जी के विवेच्य उपन्यासों में विवरणात्मक संवादों को सफलता के साथ पर्याप्त मात्रा में रेखांकित किया हुआ दृष्टिगोचर हैं।

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: कहना सही होगा कि जयप्रकाश कर्दम जी ने विवेच्य उपन्यासों 'करुणा' तथा 'छप्पर' में काफी सोच-समझकर उक्त संवादों के प्रयोग में भाषा को रोचकता, सजीवता एवं सार्थकता प्रदान की है। इन उपन्यासों में संवादों की भरमार होते हुए भी क्लिष्टता की मात्रा कहीं भी दिखाई नहीं देती। विवेच्य उपन्यासों के संवाद सामाजिक यथार्थ की स्थितियों को उद्‌घाटित करने में सक्षम हैं। इन उपन्यासों में जयप्रकाश कर्दम जी ने सफल अभिव्यक्ति की दृष्टि से सही दिशा में 'संवाद-योजना' का खयाल रखा है। तथा इसमें संवाद योजना सरल, सहज, सुबोध होने के कारण विवेच्य रचनाएँ अत्यंत सफल बनी द्रष्टव्य हैं। उन्होंने संवादों का संयोजन पात्र परिस्थिति एवं स्तर के अनुसार ही किया है। विवेच्य उपन्यासों में संवादों की भाषा भी पात्रों के अनुकूल है। अर्थात विवेच्य उपन्यासों की संवाद-योजना सुनियोजित एवं प्रभावशाली दृष्टिगोचर है।

प्रस्तुत उपन्यासों के संवादों में विविधता के दर्शन होते हैं। अशिक्षित खेतिहर मजदूर हरिया के संवाद आदर्श जीवन की संकल्पना को पूरा करने के सपने संजानेवाले रमेश और चंदन के संवाद, दलितोद्धार के बारें में रमेश और चंदन के संवाद, दलितों की पीड़ा से संवेदना दर्शानेवाली और दलित उद्धारकार्य में रमेश और चंदन की सहायता करनेवाली करुणा और रजनी इन दो नारियों के संवाद, चंदन के माता-पिता के संवाद, रमेश के विद्रोह से ओतप्रोत संवाद ये सारे संवाद उपन्यास की भाषा को बहुआयामी रूप देनें में सक्षम हैं। उपन्यास में नाटकों की अपेक्षा कम संवादों का इस्तेमाल होता है फिर भी उपन्यास के पात्र अपना मंतव्य तथा अपने विचार संवादों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। इन संवादों से परिवेशजन्य स्थिति और गति का पता चलता है। संवादों के माध्यम से पात्रों की मनस्थिति का उसे प्राप्त हुई। तत्कालीन परिस्थिति का अन्यों के प्रति उसके संबंधों का भी पता हमें चलता हैं। जयप्रकाश कर्दम जी के विवेच्य उपन्यासों में हमें पात्रों की परिवेशजन्य स्थिति की पहचान उनके संवादों से होती है। इन विवेच्य

उपन्यासों के संवादों में आत्मीयता एक-दूसरे के प्रति प्रेम, छली और शोषक प्रवृत्ति के व्यक्तियों के प्रति आक्रोश, आत्मीय जनों के प्रति स्नेह आदि के दर्शन भी होते हैं। प्रस्तुत उपन्यासों के संवादों में वैचारिकता के चेतना प्रवृत्ति की जागृत्ति के, समाज प्रबोधन के, दुष्ट प्रवृत्ति के व्यक्तियों के मनपरिवर्तन के, दलित समाज उद्धार के दर्शन हमें होते हैं।

प्रस्तुत उपन्यासों की नारियों के संवादों में आक्रोश नहीं है। शांति के मार्ग की तलाश वे विविध विचारधाराओं को अपनाकर करती हैं। इनके संवादों में समता, बंधुता, विश्वशांति के दर्शन होते हैं।

विवेच्य उपन्यासों के संवाद उपन्यास की उद्देश्यपूर्ति के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

संदर्भ संकेत :

1.	डॉ.प्रतापनारायण टण्डन	-	'हिंदी उपन्यास कला'	पृ.218
2.	सुर्यदीन यादव	-	'कथाकार रामदरश मिश्र'	पृ.183
3.	डॉ.शान्ति मलिक	-	'हिंदी नाटकों की शिल्पविधि का विकास'	पृ.14से 273
4.	जयप्रकाश कर्दम	-	'करुणा'	पृ.46
5.	जयप्रकाश कर्दम	-	'छप्पर'	पृ.82
6.	जयप्रकाश कर्दम	-	'करुणा'	पृ.29
7.	जयप्रकाश कर्दम	-	'छप्पर'	पृ.82
8.	जयप्रकाश कर्दम	-	'छप्पर'	पृ.53
9.	जयप्रकाश कर्दम	-	'करुणा'	पृ.23
10.	वही	-		पृ.55
11.	जयप्रकाश कर्दम	-	'छप्पर'	पृ.31
12.	जयप्रकाश कर्दम	-	'करुणा'	पृ.19
13.	जयप्रकाश कर्दम	-	'छप्पर'	पृ.18
14.	जयप्रकाश कर्दम	-	'करुणा'	पृ.34
15.	जयप्रकाश कर्दम	-	'छप्पर'	पृ.90
16.	जयप्रकाश कर्दम	-	'छप्पर'	पृ.6
17.	जयप्रकाश कर्दम	-	'करुणा'	पृ.30
18.	जयप्रकाश कर्दम	-	'छप्पर'	पृ.100
19.	जयप्रकाश कर्दम	-	'छप्पर'	पृ.38
20.	जयप्रकाश कर्दम	-	'करुणा'	पृ.65

21. जयप्रकाश कर्दम - 'छप्पर' पृ.43

22. जयप्रकाश कर्दम - 'करुणा' पृ.69

23. वही - 'छप्पर' पृ.39

24. जयप्रकाश कर्दम - 'करुणा' पृ.8

25. जयप्रकाश कर्दम - 'छप्पर' पृ.78

26. जयप्रकाश कर्दम - 'करुणा' पृ.13

27. जयप्रकाश कर्दम - 'छप्पर' पृ.10 से 11